NEERAJ MANDLOI

प्रश्न. (3.1) Continued (जारी)

निबंध

भारत में स्वास्थ्य : स्थिति, समस्या तथा सुधार

"पहला सुख निरोगी काया"

वास्तव में मनुष्य चाहे जितना विकसित क्यों न हो जाये, अच्छे स्वास्थ्य के बिना इसकी सारी उपलब्धियाँ व्यर्थ हैं। हालही में आये कोरोना महामारी ने यह सिद्ध कर दिया कि मनुष्य की मूलभूत जरूरतें क्या है?

भारत में आदि काल से भी एक स्वस्थ शरीर को महत्व दिया गया है। 'एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है।' हमारे विश्व प्रसिद्ध चिकित्सक आचार्य चरक, सुस्रुत, आजीवक आदि ने मानव सभ्यता को अनेक विधियाँ व सूत्र दिये। आज भी भारत में स्वस्थ मंत्रालय के साथ-साथ आयुष मंत्रालय, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय आदि भारत के स्वास्थ्य सेवाओं

प्रश्न: (3.1) Continued (जारी)

को देखते हैं व योजना तैयार करते हैं। भारत अपनी जीडीपी का लगभग 1.7% भाग स्वास्थ्य सेवाओं पर व्यय करता है। कोरोना महामारी के समय विश्व ने भारत की मानवीय चेहरा प्रत्यक्ष रूप से देखा। तब जबकि कई देश अपनी विकास गति को प्रथम प्राथमिकता दे रहे थे भारत ने भारतीयों को प्राथमिकता देते हुये, उचित पर लॉकडाउन करने का निर्णय लिया। लोगों को निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया कराईं। यही नहीं, जब भारत ने स्वनिर्मित टीके का निर्माण किया, तो इसे क्रमबद्ध तरीके से भारत के साथ-साथ अन्य देशों तक पहुँचाया।

भारत में आप स्वास्थ्य व्यवस्था की बात करें तो भोर समिति की अनुशंसा पर भारत ने त्रिस्तरीय स्वास्थ्य प्रणाली अपनाई।

प्रश्न: (3.1) Continued (जारी)

भारत में प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, जिला सहकारी अस्पताल तथा स्थानीय क्षेत्र हेतु 'सब सेन्टर' स्वास्थ्य संस्थान हैं।

सब सेन्टर में एक चिकित्सक, एक नर्स अथवा मिडवाईफ के साथ-साथ अन्य पैरा मेडिकल स्टॉफ होता है। सब सेन्टर उन स्थानों पर स्थापित किया जाता है जहाँ जनसंख्या 5000 से अधिक हो। पहाड़ी या दुर्गम स्थानों पर एक संख्या मात्र 3000 है।

प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, सब केन्द्र व कामुनिटी सेन्टर के मध्य महत्वपूर्ण कड़ी है। प्राथमिक चिकित्सा में चिकित्सक, नर्स व अन्य पैरा मेडिकल स्टॉफ होता है। केन्द्र स्थापना हेतु जनसंख्या 30 हजार होनी आवश्यक है। तथा पहाड़ी क्षेत्रों में 20 हजार। प्रत्येक 4-5 सब सेन्टर पर एक प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र होता है।

कम्युनिटी सेन्टर, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के ऊपर की ईकाई है। जहाँ उन्नत स्वास्थ्य सुविधाओं के साथ - साथ विशिष्ट चिकित्सकों की नियुक्ति की जाती है। जिसमें महिला एवं शिशु विशेषज्ञ, हृदय रोग, हड्डी रोग विशेषज्ञ आदि शामिल है। केन्द्र की आवश्यक जनसंख्या एक लाख बीस हजार व पहाड़ी क्षेत्रों में 80 हजार निश्चित की गई है।

त्रिस्तरीय व्यवस्था के अतिरिक्त जिला स्वास्थ्य केन्द्र, निजी संस्थान आदि भी स्वास्थ्य सेवा दे रहे हैं। भारत में निजी संस्थानों में निवेश बढ़ा है। वे आज उन्नत तकनीक व व्यवस्थित तरीके से स्वास्थ्य सेवा देने में सक्षम हैं।

आयुष मंत्रालय भारत सरकार की अनूठी व महत्वपूर्ण पहल है जिसमें पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली को बढ़ावा दिया जा रहा है।

प्रश्न: (3.1) Continued (जारी)

भारत में स्वास्थ्य समस्याओं का अंबार है। 15वें वित्त आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत की स्वास्थ्य संरचना, जरुरत के मुताबिक नहीं है।

भारत में प्रति 1400 लोगों पर मात्र एक चिकित्सक है। ग्रामीण क्षेत्रों की बात करें तो वहाँ यह आँकड़ा और भी गंभीर है।

ग्रामीण भारत में देश की 68% जनसंख्या निवास करती है परन्तु मात्र 16% बेड उपलब्धता है।

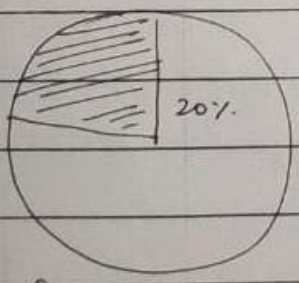

ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधा

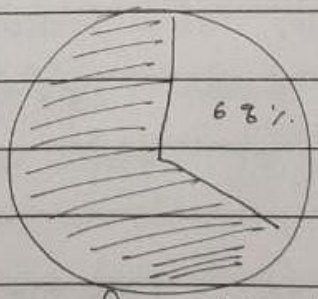

ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या प्रतिशत

प्रश्न: (3.1) Continued (जारी)

जब कोरोना महामारी का आक्रमण भारत में हुआ तो भारत मौजूदा स्वास्थ्य व्यवस्था के साथ इससे लड़ने में सक्षम नहीं था क्योंकि भारत में मात्र कुछ ही सीरम सिलेंडर निर्माता थे। ICU का कमी, चिकित्सकों की कमी, अस्पतालों का कमी, सुदूर क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने की समस्या आदि अनेकानेक समस्याएँ थी जो उजागर हुई।

एलोपैथी चिकित्सा अधिक खर्चीली है। जिसके चलते कई व्यक्ति अस्पताल में इलाज करवाने से कतराते हैं। भारत में 60% व्यक्ति टी.बी. का संपूर्ण इलाज पूरा ही नहीं कर पाते।

साथ ही चिकित्सालयों का घनत्व भी आवश्यकतानुसार नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को इलाज हेतु

लम्बी यात्रा करनी होती है जिसमें व्यय वृद्धि होती है।

महिलाएं व शिशु मूल रूप से स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं के अभाव में प्राण त्याग देते हैं। भारत में मातृ मृत्यु दर 113 प्रति लाख व शिशु मृत्यु दर 32 प्रति हजार है जो एक गंभीर आंकड़ा है। वहीं मध्यप्रदेश, उड़ीसा, बिहार आदि राज्यों में मातृ मृत्यु दर व शिशु मृत्यु दर ~~क~~ और भी अधिक है।

बच्चों में कुपोषण 35% है। अर्थात हर तीन में से एक बच्चा कुपोषण का शिकार है। ~~क~~ हालही में हुए आई ग्लोबल हंगर इंडेक्स के अनुसार भारत की स्थिति 117 देशों में 102 वी है। भारत में स्टंटिंग 35%, वेस्टिंग 17% व पोषण की कमी 32% है। कुल 58% शिशु एनिमिया जैसी गंभीर बीमारी के शिकार है।

प्रश्न: (3.1) Continued (जारी)

नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार भारत को कुल बजट का 2% भाग चिकित्सा में लगाने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत 5 प्रमुख मूलभूत आयामों को शामिल किया गया है।

पहला है, महिलाओं व शिशु का संपूर्ण विकास। इसके लिए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के तालमेल से 'रामनचा' कार्यक्रम चलाया जा रहा है। जिसमें परिवार स्वास्थ्य से बालक के 18 वर्ष तक के होने तक एक व्यापक कार्यनीति है।

दूसरा, मध्यसंचरना में पीपीपी मॉडल को बढ़ावा देना व नि इसकी सहायता से स्वास्थ्य सुविधाओं को विस्तारित करना।

तीसरा, असंक्रामित (नॉन कम्युनिकेबल) रोग जैसे कैंसर, मधुमेह, रक्तचाप आदि हेतु

Note Write the answers of any 15 of the following questions in maximum 150 words. Each question carries 6 (Six) marks.

प्रश्न: (2.2) Continued (जारी)

स्वास्थ्य चेकअपस् को बढ़ाना। साथ ही इनसे होने वाले व्यय को कम करना। इसके अंतर्गत राष्ट्रीय एड्स कार्यक्रम, मधुमेह कार्यक्रम आदि संचालित किये जा रहे हैं।

चौथा, संक्रमण रोग जैसे कोरोना, मलेरिया डेंगू, कालाजर, हाथीपाँव आदि हेतु राज्य व स्थानीय सरकारों के साथ मिलकर ~~सावधा~~ सावधानी संबंधी जानकारी देना व मेडिसिन्स् उपलब्धकर बना शामिल है।

पाँचवा, स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं की गुणवत्ता बढ़ाना व उपलब्धता सुनिश्चित करना। इस हेतु उन्नत प्रशिक्षण संस्थान व अनुसंधान आदि स्थापना व मौजूदा व्यवस्था को और अधिक विश्व स्तरीय बनाना है।

डिजिटलीकरण के चलते टेलीमेडिसिन का चलन बढ़ा है परन्तु यह सुविधा अभी ग्रामीणांचलों तक पहुँचना बाकी है।

उत्तर:

बजट 2021 में स्वास्थ्य संरचना के लिये कुल 64000 करोड़ का मानदेय निश्चित हुआ है साथ ही पीपीपी मॉडल को बढ़ावा देने का प्रावधान किया गया है।

आयुष्मान भारत विश्व की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा स्कीम है इसके अंतर्गत एक परिवार को 5 लाख तक की स्वास्थ्य सेवाएँ दी जा रही हैं।

भारत में कुपोषण से लड़ने के लिए पोषण अभियान 2.0 चलाई है जिसका लक्ष्य कुपोषण को 2022 तक खत्म करने का है।

स्वास्थ्य सेवाओं के साथ-साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता व स्वस्थ जीवन शैली पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। भारत जनसंख्या की दृष्टि से युवा देश है परन्तु 2050 तक 19% जनसंख्या वृद्ध होगी। एक व्यापक स्वास्थ्य नीति की आवश्यकता है।

(६) राजभाषा हिन्दी की विकास यात्रा।

हिन्दी, अपभ्रंश से विकसित हुई है। हिन्दी मूल भाषा संस्कृत है। हिन्दी विकास 8वी शताब्दी से होना प्रारंभ हुआ। जब सरहपा, ~~शालिमार भ~~ शालिभद्र सूरी आदि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इसे विस्तार किया। 10वीं व 11वी शताब्दी के प्रमुख कवि चंदबरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' के साथ ~~इसी~~ इसे लोकजन तक पहुँचाया। परन्तु हिन्दी साहित्य का स्वर्णिम युग भक्तिकाल से प्रारंभ हुआ। जहाँ कवि तुलसीदासजी की रामचरित मानस, सूरदासजी की सूरसागर, मीरा जी के भजन आदि घर-घर की दिनचर्या में शामिल हो गये।

आधुनिक भारत के भारतेंदु हरिचंद ने अपनी अनेक रचनाओं के माध्यम से हिन्दी शब्दावली को सुसंगठित किया। द्विवेदी काल के कवि हजारीप्रसाद द्विवेदी,

रामधारी सिंह दिनकर, अयोध्या प्रसाद जी आदि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज का जीवंत चित्र ~~उकेरते~~ उकेरते हुये हिन्दी को जन भाषा बना दिया। इसके बाद छायावादी युग में मैथलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान, आदि ने प्रयोग प्रारंभ किये व भाषा को एक गूढ़ता प्रदान करी।
इसके बाद प्रयोगवादी कवियों ने व लेखकों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा हेतु तैयार कर दिया था। जरूरत थी तो बस प्रशासन द्वारा इसे अपनाई जाने की।
भारतीय संविधान में हिन्दी भाषा को राजभाषा हेतु बनाने के लिये उचित प्रावधान किये गये। स्वतंत्रता के ~~प्रस~~ बाद अंग्रेजी का ~~समानार्थ~~ राजपत्रावली हेतु प्रयोग 15 वर्ष तक जारी रखने की बात हुई।
इस बीच रामचंद्र शुक्ल, व अन्य विद्वानों द्वारा हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली तैयार की गई।

अधिनियम 1968 व नियम 1976 के द्वारा भारत के विभिन्न हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी का प्रयोग अनिवार्य किया गया तथा अन्य राज्यों में भी इसके प्रसार को बढ़ावा दिया गया। इसके लिये द्विभाषीय व ~~त्रिभाषीय~~ त्रिभाषीय सूत्र अपनाये गये।

वर्तमान समय में हिन्दी न केवल भारत में अन्य देशों में बोली व समझी जाने वाली प्रमुख भाषा है। विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन इसके प्रसार व विस्तार हेतु किया जाता है।

वैश्वीकरण के कारण हिन्दी में नयी शब्दावली आई है। परन्तु भाषा का शुद्ध प्रयोग कम भी हुआ है। हिन्दी में कम्प्युटीकरण व विज्ञान शब्दावली की आवश्यकता स्पष्ट है। हिन्दी में किसी भी अन्य भाषा से अधिक क्षमता है। हिन्दी को प्रमाणिक बनाने हेतु प्रयास किये जा रहे हैं।

ई-गवर्नेंस

नवोन्मुखी इलेक्ट्रॉनिक सुशासन एक बढ़ाई शासन व्यवस्था है जिसमें पारदर्शिता, व जनता की भागीदारी बढ़ती है। ई गवर्नेंस के तीन प्रमुख आयाम हैं। ई- प्रशासन, ई- भागीदारी तथा ई- वितरण।

ई गवर्नेंस से लाभ: इस माध्यम से पारदर्शिता में वृद्धि होगी। जनता का प्रशासन में विश्वास बढ़ेगा। उदाहरण: किसी निविदा का ऑनलाइन प्रकाशन, फिर ऑनलाइन बिडिंग तथा चयनित बिडर की ऑनलाइन सूची। कार्य प्रणाली को स्पष्ट व सरल बनाती ई गवर्नेंस भ्रष्टाचार निवारण के लिये आहम अहम प्रणाली साबित हो सकती है।

क

चुनौतियाँ : इंटरनेट की पहुँच ग्रामीण क्षेत्रों में 30% से कम है। तथा ई-साक्षरता में कमी है।

प्रशासन के कर्मचारी भी नई तकनीक से पूर्णतः अवगत नहीं है। इसे क्रियान्वयन को लाने के लिये उपलब्धता व ~~डिजीटल~~ डिजीटल साक्षारता बढ़ने की आवश्यकता है।

प्रशासन के प्रयास : कर्मयोगी मिशन के अंर्गत ई-ट्रेनिंग आदि की व्यवस्था, कौशल विकास कार्यक्रम के अंर्तगत कम्प्यूटर की अनिवार्य ट्रेनिंग, हाई स्पीड इंटरनेट के हेतु निजी कम्पनियों से करार आदि द्वारा प्रशासन ई गवर्नेंस की ओर ~~अग्र~~ अग्रसर है।

आगे की राह चुनौतियों से भरी है क्योंकि ई-गवर्नेंस में डाटा चोरी आदि जैसी समस्याएँ हैं। जिसके लिए प्रशासन को एक व्यवस्थित नीति निर्माण करनी होगी।

ई-गवर्नेंस भारतीय शासन व्यवस्था में एक नई शुरुआत लिखेगी। इसके परिणाम अभी से दिखने शुरू हो गई। सार्वजनिक वितरण प्रणाली में इसके उपयोग से, नीति आयोग के अनुसार 25% अपव्यय कम हुआ है तथा 29% नये हितग्राही व्यवस्था से जुड़े हैं।